नव-वर्ष

नव-वर्ष नव-दुल्हन की भाँति
आ रही है सज-धज करके
आगत के स्वागत को प्रकृति
खड़ी धुंध की शॉल उड़ाने ।
हरे-भरे सब खेत खड़े हैं
पत्तों में ले ओस के मोती
रात जगी है आज सुबह तक
पहले मिलने की आशा में ।
सूरज बहुत विनम्र लग रहे
भोली सूरत में हो बालक
चाहत अभिवादन की मन में
लगी लगन कुछ ज्यादा ज्यादा ।
ना जाने मन में उसके क्या
करे मसखरी हवा आज कुछ
इठलाती सी बल खाती सी
दे रही उपस्थित जान बूझकर ।
हे नव वर्ष हर्ष उपजाना
झोली भरके खुशियाँ लाना
आना लाना भूल ना जाना
तुझसे उत्कर्ष चाहे जमाना ।

व्यग्र पाण्डे

सजी प्रकृति

चित्रकार सी पावस बनकर
बूँदरूप अमृतरस बन कर
बरसी धरा के कण कण पर
सजी प्रकृति दुल्हन बनकर ।
हरे खेत हरियाली घाटी
झरनों ने खुशहाली बाँटी
नीलाम्बर निहारें मन से
पहाड़ खड़े हैं बन ठनकर ।
नदी युवती सी इठलाती
कदम कदम पर बल खाती
देख वेग पानी का किनारें
खुद को साधे है संभलकर ।
सुख पा रहे नयन सभी के
होठों पर सुख वयन सभी के
कान सुन रहे अलौकिक वाणी
स्वर्ग की आभा आई चलकर ।

ISSN:2583-8849